

॥ २८ ॥ २९ ॥ इतिभीष्मपर्वणिनैलकंठीयेभारतभाष्येसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ दृष्टेति ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ स्तनयितुर्गर्जितं ॥ ७ ॥
ततोदुर्योधनोराजाकलिंगैर्बहुभिर्वृतः ॥ पुरस्कृत्यरणेभीष्मपांडवानभ्यवर्तत ॥ २८ ॥ तथैवपांडवाः सर्वेपरिवार्यवृकोदरं ॥ भीष्ममभ्यद्रवन्क्रुद्धास्ततोयुद्धम
वर्तत ॥ २९ ॥ इतिश्रीमहाभारतेभीष्मपर्वणिभीष्मव० संकुलयुद्धेसप्ततितमोऽध्यायः ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ संजयउवाच दृष्ट्वा
भीष्मेणसंसक्तान्भ्रातृनन्यांश्चपार्थिवान् ॥ समभ्यधावद्वांगेयमुद्यतास्त्रोधनंजयः ॥ १ ॥ पांचजन्यस्यनिर्घोषंधनुषोगांडिवस्यच ॥ ध्वजंचदृष्ट्वापार्थस्यसर्वा
न्नोभयमाविशत् ॥ २ ॥ सिंहलांगूलमाकाशेज्वलंतमिवपर्वतं ॥ असज्जमानंवृक्षेषुधूमकेतुमिवोत्थितं ॥ ३ ॥ बहुवर्णविचित्रंचदिव्यंवानरलक्षणं ॥ अपश्य
ममहाराजध्वजंगांडीवधन्वनः ॥ ४ ॥ विद्युतंमेघमध्यस्थांभ्राजमानामिवांबरे ॥ ददृशुर्गांडिवंयोधारुक्मपृष्ठंमहामृधे ॥ ५ ॥ आशुश्रुमभृशंचास्यशक्रस्येवा
भिगर्जतः ॥ सुघोरंतलयोःशब्दनिघ्नतस्तववाहिनीं ॥ ६ ॥ चंडवातोयथामेघःसविद्युस्तनयितुमान् ॥ दिशःसंप्लावयन्सर्वाःशरवर्षैःसमंततः ॥ ७ ॥ समभ्यधा
वद्वांगेयंभैरवास्त्रोधनंजयः ॥ दिशंप्राचींप्रतीचींचनजानीमोक्षमोहिताः ॥ ८ ॥ कांदिभूताःश्रांतपत्राहताश्वाहतचेतसः ॥ अन्योन्यमभिसंश्लिष्ययोधास्तेभ
रतर्षभ ॥ ९ ॥ भीष्ममेवाभ्यलीयंतसहसर्वैस्तवात्मजैः ॥ तेषामार्तायनमभूद्भीष्मःशांतनवोरणे ॥ १० ॥ समुत्पतंतिवित्रस्तारथेभ्योरथिनस्तथा ॥ सादिन
श्चाश्वपृष्ठेभ्योभूमौचापिपदातयः ॥ ११ ॥ श्रुत्वागांडीवनिर्घोषंविस्फूर्जितमिवाशनेः ॥ सर्वसैन्यानिभीतानिव्यवालीयंतभारत ॥ १२ ॥ अथकांबोजजैरश्वै
र्महद्भिःशीघ्रगामिभिः ॥ गोपानांबहुसाहसैर्बालैर्गोपायनैर्वृतः ॥ १३ ॥ मद्रसौवीरगांधारैस्त्रैर्गतेष्वविशांपते ॥ सर्वकालिंगमुख्यैश्चकलिंगाधिपतिर्वृतः ॥
॥ १४ ॥ नानानरगणौघैश्चदुःशासनपुरःसरः ॥ जयद्रथश्चनृपतिःसहितःसर्वराजभिः ॥ १५ ॥ हयारोहवराश्वैवतवपुत्रेणचोदिताः ॥ चतुर्दशसहस्राणिसौबलं
पर्यवारयन् ॥ १६ ॥ ततस्तेसहिताःसर्वेविभक्तरथवाहनाः ॥ अर्जुनंसमरेजघ्नुस्तावकाभरतर्षभ ॥ १७ ॥ रथिभिवारिणैरश्वैःपादातैश्चसमीरितं ॥ घोरमायोध
नंचक्रेमहाभ्रसदृशंरजः ॥ १८ ॥ तोमरप्रासनाराचगजाश्वरथयोधिनां ॥ बलेनमहताभीष्मःसमसज्जकिरीटिना ॥ १९ ॥ आवंत्यःकाशिराजेनभीमसेनेनसै
धवः ॥ अजातशत्रुर्मद्राणाच्छेषभेणयशस्विना ॥ २० ॥ सहपुत्रःसहामात्यःशल्येनसमज्जत ॥ विकर्णःसहदेवेनचित्रसेनःशिखंडिना ॥ २१ ॥ मत्स्यादुर्योधनं
जग्मुःशकुनिंचविशांपते ॥ द्रुपदश्चेकितानश्चसात्यकिश्चमहारथः ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥